www.jankriti.com

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

जनकृति

116
दिसंबर 2024

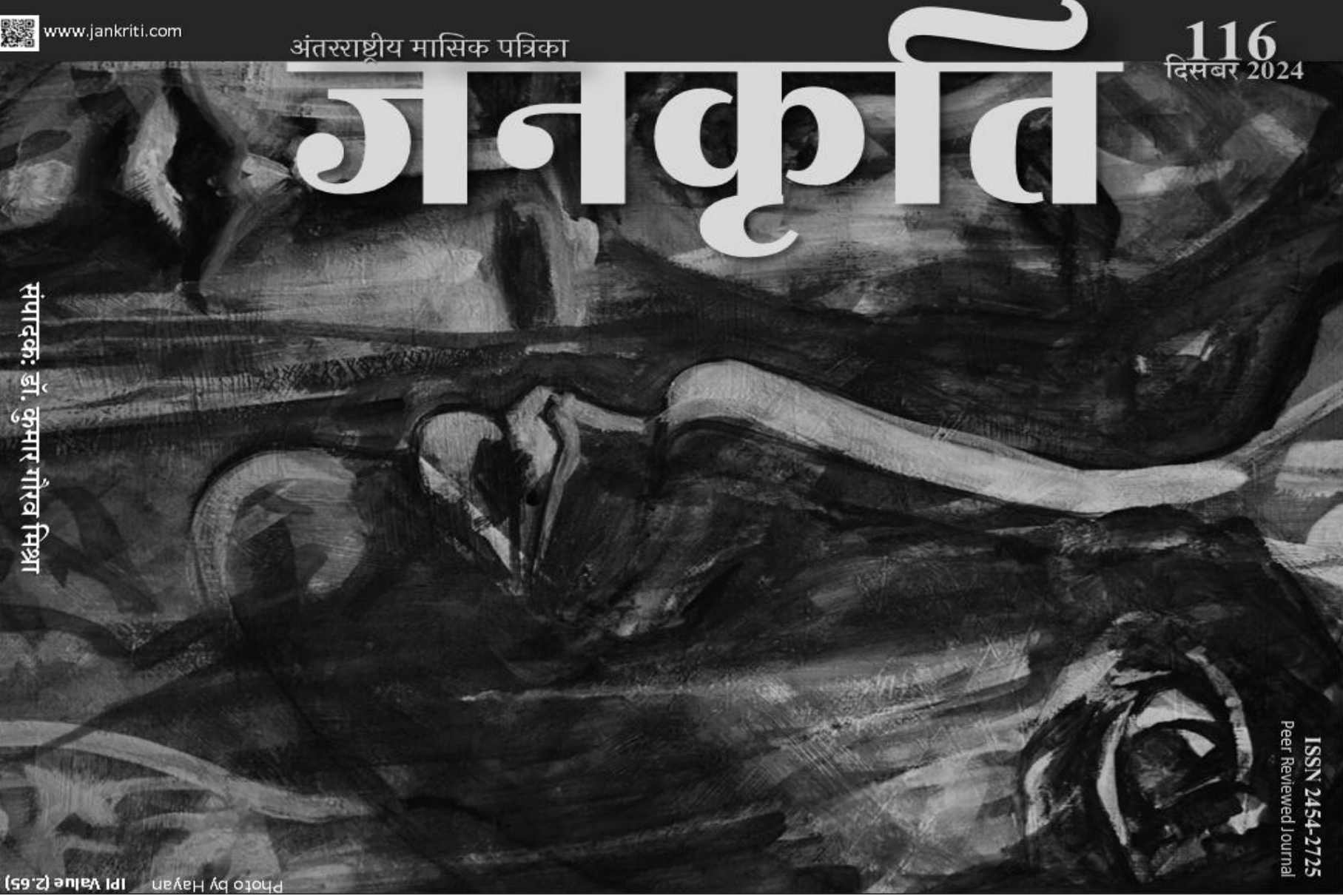

संपादक: डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

ISSN 2454-2725
Peer Reviewed Journal

Photo by Hayan IPI Value (2.65)

जनकृति

अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष 10, अंक 116 **दिसंबर 2024**

परामर्श मंडल

डॉ. सुधा ओम ढींगरा, प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रो. रमा, डॉ. हरीश नवल, प्रो. हरीश अरोड़ा, डॉ. प्रेम जन्मेजय, डॉ. कैलाश कुमार मिश्रा, प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो. कपिल कुमार, प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव प्रो. रत्नेश विश्वक्सेन

संपादक

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा
(सहायक प्रोफ़ेसर, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार)

सहायक संपादक

प्रो. पुनीत बिसारिया
(प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)

संपादन मण्डल/विशेषज्ञ समिति

डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोसले (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ , महाराष्ट्र)
डॉ. दीपेन्द्र सिंह जाड़ेजा (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय, वड़ोदरा)
डॉ. नाम देव (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. प्रज्ञा (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रचना सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रूपा सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, बाबु शोभा राम गोवेरमेंट आर्ट कॉलेज, राजस्थान)
डॉ. पल्लवी (सहायक प्रोफ़ेसर, तेजपूर विश्वविद्यालय, असम)
डॉ. मोहसिन खान (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जेएसएम कॉलेज, रायगढ़, महाराष्ट्र)
डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा (सहायक प्रोफ़ेसर, मिजोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम)
डॉ. प्रवीण कुमार (सहायक प्रोफ़ेसर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश)
डॉ. मुन्ना कुमार पाण्डेय (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी (सहायक प्रोफ़ेसर, जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ, राजस्थान)
डॉ. अंबिकेश त्रिपाठी (सहायक प्रोफ़ेसर, गांधी एवं शांति विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
डॉ. ज्ञान प्रकाश (सहायक प्रोफ़ेसर, बिहार)

संपादन सहयोग

डॉ. चन्दन कुमार (दिल्ली)
डॉ. राकेश कुमार (दिल्ली)

संस्थापक सदस्य

कविता सिंह चौहान (मुंबई)
डॉ. जैनेन्द्र कुमार (बिहार)

अंतरराष्ट्रीय सदस्य

प्रो. अरुण प्रकाश मिश्रा (स्लोवेनिया), डॉ. इंदु चंद्रा (फ़िजी), डॉ. सोनिया तनेजा (स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी), डॉ. अनिता कपूर (अमेरिका), राकेश माथुर (लंदन), रिद्या (श्री लंका), मीना चोपड़ा (कैनेडा), पूजा अनिल (स्पेन)

जनकृति अव्यवसायिक
दिसंबर 2024 अंक 116 , वर्ष 10

सहयोग राशि	:	60 रुपये (वर्तमान अंक)
		150 रुपये (संस्थागत)
व्यक्तिगत सदस्यता	:	800 रुपये (वार्षिक)
		3000 रुपये (पंचवर्षीय)
		5000 रुपये (आजीवन) **(डिजिटल प्रति सदस्यता)**
संस्थागत सदस्यता	:	1200 रुपये (वार्षिक)
		6000 रुपये (पंचवर्षीय)
		10000 रुपये (आजीवन)
बैंक खाता विवरण	:	Account holder's name- Kumar Gaurav Mishra
		Bank name - Punjab National Bank
		Account type – saving account
		Account no. 7277000400001574
		IFSC code- PUNB0727700
पत्र व्यवहार	:	फ्लैट- 401, वृंदावन अपार्टमेंट
		फजलगंज, मंगलम होटल, ओल्ड जीटी रोड़, सासाराम, रोहतास, बिहार
		पिन कोड: 821115, संपर्क- +918805408656
नोट	:	प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
		सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक है।
ध्यानार्थ	:	अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप जनकृति में शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में साहित्यिक रचनाएँ, वैचारिक लेख, साक्षात्कार एवं पुस्तक समीक्षा भी प्रकाशित होती है। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

JANKRITI
Interdisciplinary Peer-Reviewed Bilingual International Monthly Magazine
Editor: Dr. Kumar Gaurav Mishra
Language: Bilingual (Hindi & English)
Publisher: JANKRITI
ISSN: 2454-2725

संपादकीय

आप सभी पाठकों के समक्ष जनकृति का दिसंबर 2024 अंक प्रस्तुत है। इस अंक में आप साहित्य, राजनीति, अनुवाद इत्यादि क्षेत्रों के महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित शोध आलेख, लेख पढ़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त अंक में आप साहित्यिक रचनाएँ भी पढ़ सकते हैं।

जनकृति एक बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका है। यह पूर्ण रूप से विमर्श केन्द्रित पत्रिका है, जहां आप विभिन्न अनुशासन के नवीन विषयों को एकसाथ पढ़ सकते हैं। पत्रिका में एक ओर जहां साहित्य की विविध विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित की जाती है वहीं नवीन विषयों पर लेख, शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

- **डॉ. कुमार गौरव मिश्रा**

जनकृति

अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष 10, अंक 116 **दिसंबर 2024**

अनुक्रम

संपादकीय 4

अनुवाद

संस्कृत साहित्य और साहित्यानुवाद का स्वरूप एवं परंपराएं/ डॉ. गोविन्द कुमार धारीवाल 8

दलित एवं आदिवासी -विमर्श

सिक्किम का लेपचा समुदाय / वीरेन्द्र परमार 17

स्त्री-विमर्श

हिंदी के समकालीन स्त्री कथा साहित्य में क्वीर विमर्श / डॉ. हेमा नारायण 24

मालती जोशी की कहानियों में अभिव्यक्त नारी समस्याएं / प्रमिला देवी, डॉ. आशा मीणा 35

स्त्री- विमर्श / डॉ. मुकेश कुमार राम 45

समसामयिक-विमर्श

वर्तमान समय में भारतीय न्यायपालिका में सुधारों की आवश्यकता / विनय कुमार 52

साहित्यिक-विमर्श

हिन्दी उपन्यास में विश्वविद्यालय परिसर/ अनुष्का मद्धेशिया 58

हिजम इरावत की कविताओं में युग चेतना: विशेष संदर्भ- 'माँ की आराधना'/ डॉ॰ शिप्रा देवी 65

महानायक बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर उपन्यास का वर्तमान परिपेक्ष में प्रसांगीता एवं प्रोक्ति आधारित संवेदनात्मक विश्लेषण/ कामेश्वर सिंह 73

रघुवीर सहाय की कविताओं में अभिव्यंजित कथा संसार / प्रतीक कुमार मौर्य, सुमित कुमार चौधरी 79

प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध: एक विवेचनात्मक विश्लेषण / कोमल कुमारी 87

असुर आदिवासियों की संस्कृति: एक आकलन ('ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास के संदर्भ में) / डॉ. नीरज शर्मा 99
शिवमूर्ति की कहानियों में लोकजीवन का यथार्थ / रश्मि मिश्रा 108
चित्रा मुद्गल के कथासाहित्य में उत्तर-आधुनिक तत्त्वों की खोज / प्रीति सिंह 116
हिंदी कथा साहित्य में सामाजिक जनतंत्र – एक अवलोकन / कौशल कुमार पटेल 130
A Comparative Analysis of Dangun and Rishi Manu: The Foundations of National Identity in Korea and India / Pavan Kumar 137

लोक साहित्य, धर्म एवं संस्कृति

The Evolution and Impact of Spiritual Tourism: A Comprehensive Analysis of Cultural Heritage Preservation and Sustainable Development / Dr. Ruchira Pathak 149

साहित्यिक रचनाएँ

साहित्यिक रचनाएँ: कहानी

अनूदित लातिन अमेरिकी कहानी- एक पीला फूल- जूलियो कोर्टाज़ार / अनुवादक- सुशांत सुप्रिय 173

साहित्यिक रचनाएँ: ग़ज़ल

ग़ज़ल / निज़ाम फतेहपुरी 184

साहित्यिक रचनाएँ: डायरी

लिखे बगैर रहा नहीं जाता / कुबेर कुमावत 186

साहित्यिक रचनाएँ: लघुकथा

तारा / डॉ.गौस शेख 191

साहित्यिक रचनाएँ: व्यंग्य

कृत्रिम वार्ता – एआई मेरे भाई / डॉ. मुकेश असीमित 205

संस्कृत साहित्य और साहित्यानुवाद का स्वरूप एवं परंपराएं

डॉ. गोविन्द कुमार धारीवाल
सहायक अध्यापक
रा. इ. का. धोपडधार, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड
मोबाइल- 9536352124
ईमेल- drgkdhariwal@gmail.com

सारांश

वर्तमान युग अनुवाद का युग है यह कहने में कोई संकोच नहीं है क्योंकि समूचा विश्व आज साहित्य अनुवाद के माध्यम से छोटा हो गया है। प्रत्येक साहित्य को अनूदित करके आम जन की आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध हो गया है। यह साहित्य ज्ञानवर्धक हो रहा है। अनुवाद का आरंभ आवश्यकता से हुआ है क्योंकि पाठकों की नियमित मांग के आधार पर एक भाषा साहित्य को दूसरी भाषा में अनूदित किया जाता है। भारत में अनुवाद का इतिहास प्राचीन काल से रहा है। परंतु आज के अनुवाद में और प्राचीन काल के अनुवाद में बहुत अंतर है या कहें कि प्राचीन काल का अनुवाद, अनुवाद नहीं था क्योंकि प्राचीन भारतीय साहित्य में कहीं भी अनूदित साहित्य नहीं मिलता और न ही कोई अनुवाद की विधा। प्राचीन भारतीय साहित्य में अनुवाद का न मिलना एवं किसी भी विधा का अनूदित न होना। भारतीय प्राचीन साहित्य का आधार वैदिक साहित्य को माना जाता है। वैदिक साहित्य में चारों वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता आदि संस्कृत साहित्य के ज्ञानवर्धक ग्रंथ है। अपने ज्ञान के भंडार के कारण आज वैदिक साहित्य विश्व में प्रकाश का पुंज बन गया है। समकालीन साहित्य में अन्य विद्वानों ने अनुवाद नहीं किया परंतु वर्तमान समय में वैदिक साहित्य का संपूर्ण अनुवाद भिन्न-भिन्न भाषाओं में किया गया।

बीज शब्द: *युग, अनुवाद, संस्कृति, साहित्य, प्राचीन, अनूदित*

शोध आलेख

वर्तमान युग अनुवाद का युग है यह कहने में कोई संकोच नहीं है क्योंकि समूचा विश्व आज साहित्य अनुवाद के माध्यम से छोटा हो गया है। प्रत्येक साहित्य को अनूदित करके आम जन की आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध हो गया है। यह साहित्य ज्ञानवर्धक हो रहा है। अनुवाद का आरंभ आवश्यकता से हुआ है क्योंकि पाठकों की नियमित मांग के आधार पर एक भाषा साहित्य को दूसरी भाषा में अनूदित